इकाई 20 कृषि व्यवस्था

इकाई की रूपरेखा

20.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम 13वीं-14वीं शताब्दी की कृषि अर्थव्यवस्था का अध्ययन करेंगे। हम यह भी मालूम करने का प्रयास करेंगे कि दिल्ली सल्तनत की स्थापना से कृषि उत्पादन और कृषि संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ा? इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्नलिखित की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे:

- कृषि योग्य भूमि का विस्तार, किसानों द्वारा उगाई जाने वाली फसलें, नहर सिंचाई और इसका प्रभाव, तथा
- कृषि संबंध, पूर्ववर्ती ग्रामीण व्यवस्था में आये परिवर्तन तथा अधीनस्थ ग्रामीण कुलीन तंत्र।

20.1 प्रस्तावना

दिल्ली सल्तनत की स्थापना के बाद कृषि उत्पादन व्यवस्था में बहुत क्रांतिकारी परिवर्तनों की आशा करना उचित नहीं होगा। हालांकि कुछ नई तकनीकों के आने से सिंचाई व्यवस्था में सुधार हुआ तथा नील और अंगूर जैसी कुछ फसलों का अधिक प्रसार हुआ जिन्हें नकदी फसलें (जिनकी बाजार में मांग हो) कहते हैं। वास्तव में महत्वपूर्ण परिवर्तन कृषि संबंधों के क्षेत्रों में दिखाई देते हैं। डी.डी. कोसाम्बी के अनुसार इन परिवर्तनों ने भारतीय सामंतवाद में पहले से मौजूद तत्वों को अधिक प्रगाढ़ बनाने से अधिक कुछ नहीं किया जबकि मौहम्मद हबीब इन परिवर्तनों को इतना अधिक महत्वपूर्ण और प्रगतिशील मानते हैं कि उन्होंने इसे "ग्रामीण क्रांति" का नाम दिया।

20.2 कृषि उत्पादन

तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में भूमि और व्यक्ति का अनुपात बहुत अनुकूल था (अर्थात् काफी मात्रा में भूमि उपलब्ध थी, और उस पर कृषि करने वालों की संख्या कम)। 1200 ई. में भारत की जनसंख्या 1800 ई. की तुलना में काफी कम थी। परन्तु यह कितनी कम थी इसके विषय में हमें कोई ज्ञान नहीं है। इस समय के इस प्रकार के कोई आंकड़े तो उपलब्ध नहीं हैं। परन्तु ऐतिहासिक ग्रंथों से यह पता चलता है कि 16वीं शताब्दी की तुलना में 13वीं-14वीं शताब्दी में काफी कम क्षेत्र बसे हुए थे। गंगा-यमुना के दोआब के अत्यधिक उपजाऊ क्षेत्र में भी काफी बड़े-बड़े जंगल और चरागाह फैले हुए थे। 13वीं शताब्दी में सूफी संत निज़ामुद्दीन औलिया ने दिल्ली और बदायूँ के बीच यात्रियों को शेरों द्वारा परेशान करने का विवरण दिया है। बर्नी के अनुसार 14वीं शताब्दी में इस क्षेत्र में इतने घने जंगल थे कि बहुत बड़ी संख्या में किसानों ने सुल्तान की सेना से बचने के लिए यहां शरण ली। यहां तक कि बाबर के समय (1526-30) में भी मध्य भारत के जंगलों में, कालपी और कानपुर के दक्षिण में, यमुना के बीहड़ों के पार हाथी घूमते रहते थे।

लेकिन अकबर के शासन के अंत तक (1605 ई.) मध्य दोआब के लगभग सम्पूर्ण क्षेत्र में खेती होती थी। इससे ऐसा प्रतीत होता है कि दिल्ली सल्तनत के काल में कृषि योग्य भूमि के ऐसे विस्तृत क्षेत्र मौजूद थे जिन पर कृषि नहीं होती थी। इसलिए भूमि के ऐसे टुकड़ों पर नियंत्रण की अपेक्षा ऐसे व्यक्तियों पर नियंत्रण महत्वपूर्ण था जो कृषि करते थे। इस स्थिति का कृषि संबंधों पर प्रभाव का हम यथा स्थान पर अध्ययन करेंगे। हालांकि कृषि व्यवस्था को समझने के लिए भूमि और व्यक्ति का अनुपात भी बहुत महत्वपूर्ण है। भूमि के अनुकूल अनुपात होने का तात्पर्य है कि कृषि काफी व्यापक थी। विस्तृत कृषि का सीधा और सरल अर्थ यह है कि कृषि उत्पादन के बढ़ने का तात्पर्य था अधिक भूमि पर फसल बोना। जबकि दूसरी ओर सघन खेती का अर्थ है कृषि योग्य भूमि का न बढ़ना बल्कि उसी सीमित उपलब्ध भूमि पर अधिक फसल पैदा करना। इसके लिए अधिक निवेश की आवश्यकता होती है। यह निवेश अधिक मजदूर, अधिक हल, अधिक उर्वरक और अतिरिक्त सिंचाई के साधनों के रूप में होता है। अतः कृषि योग्य भूमि के काफी मात्रा में उपलब्ध होने से दिल्ली सल्तनत में कृषि बहुत विस्तृत थी। बड़ी मात्रा में कृषि योग्य अतिरिक्त भूमि और खाली पड़ी भूमि का अर्थ था कि पशुओं के लिए काफी चारागाह उपलब्ध थे। **मसालिक-उल अबसार** नामक समकालीन ग्रंथ के लेखक के अनुसार भारत में पशुओं की संख्या काफी अधिक और मूल्य बहुत कम था। अफीफ के अनुसार दोआब में कोई भी गांव ऐसा नहीं था जहां पशुशाला न हो। इन पशुशालाओं को **खरक** कहा जाता था। बैलों की संख्या तो इतनी अधिक थी कि ढोने के लिए अनाज और अन्य सामान बैल गाड़ी के बजाय बैलों के ऊपर लादा जाता था।

20.2.1 फसलें तथा अन्य कृषि उत्पादन

दिल्ली सल्तनत की कृषि की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता किसानों द्वारा बड़ी संख्या में फसलें उगाना था। संभवतः दक्षिण चीन के अतिरिक्त विश्व के किसी अन्य भाग में इतनी बढ़ी संख्या में फसलें नहीं उगाई जाती थीं। इब्न बतूता भारत में फसलों की इतनी बड़ी संख्या देख कर बहुत प्रभावित हुआ। उसने दोनों प्रमुख फसलें **खरीफ** और **रबी** के मौसम की विभिन्न उपजों का विवरण विस्तार से दिया है। वह यह भी बताता है कि दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में दो फसलें पैदा की जाती थी। इसका तात्पर्य है कि एक ही भूमि पर **खरीफ** और **रबी** दोनों फसलें पैदा होती थीं। ठक्कर फेरू, जो अलाउद्दीन खलजी के समय दिल्ली की टकसाल का प्रमुख था, लगभग 1290 ई. में करीब 25 फसलों के नाम गिनता है और उनकी औसत उपज भी बताता है। उपज के बारे में हम निश्चित रूप से कुछ कहने में असमर्थ हैं क्योंकि फेरू माप-तौल की जिन इकाइयों का वर्णन करता है उनके विषय में हमें विस्तृत ज्ञान नहीं है। परन्तु उसके विवरण से विभिन्न फसलों के बारे में काफी जानकारी प्राप्त होती है। खाने वाले अनाजों की फसलों में वह गेहूं, धान, मोटे अनाज (जौ, ज्वार, मोठ) तथा दालों (उड़द, मूंग, मसूर इत्यादि) का विवरण देता है। जबकि नगदी फसलों में वह गन्ना, कपास, तथा तेल प्रदान करने वाली फसलों, तिल और अलसी आदि के नाम बताता है।

इससे हम यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि शायद बढ़ी हुई सिंचाई सुविधाओं ने गन्ना और गेहूं जैसी **रबी** (जाड़े की फसलों) फसलों के अधीन क्षेत्र बढ़ाने में मदद की होगी। "तुर्की" विजेताओं के साथ अब गन्ने से मदिरा बनाने की विधि काफी बड़े क्षेत्र में लोकप्रिय हो गई। बर्नी के अनुसार दिल्ली के आस-पास और दोआब के क्षेत्र में मदिरा बनाना एक ग्रामीण उद्योग के रूप में स्थापित हो गया। थोड़ी आश्चर्य की बात यह है कि ठक्कर फेरू अपने विवरण में नील की खेती के विषय में कुछ नहीं कहता जबकि नील के उत्पादन का संकेत इस बात से मिलता है कि इस समय काफी मात्रा में नील का निर्यात ईरान के लिए होता था। इस बात के प्रमाण मिलते हैं कि ईरान में इलखान शासकों द्वारा नील की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा था ताकि भारत पर निर्भरता समाप्त हो जाये। ऐसा लगता है कि नील बनाने के हौज़ में चूने-गारे के प्रयोग से सुधार होने के कारण नील की खेती को बढ़ावा मिला होगा।

इब्न बतूता के विवरण से हमें दिल्ली सल्तनत में फलों के उत्पादन के विषय में भी पता चलता है। ऐसा प्रतीत होता है कि कृषकों को फलों की कलम लगाने की तकनीक का ज्ञान नहीं था। प्रारंभ में दिल्ली के अतिरिक्त केवल कुछ स्थानों पर ही अंगूर उगाये जाते थे। परन्तु अफीफ के अनुसार चौदहवीं शताब्दी में अंगूरों का उत्पादन इतना बढ़ गया कि इसके दाम गिर गए। संभवतः ऐसा दो कारणों से हुआ :

i) मौहम्मद तुगलक की किसानों को सलाह कि वे लगातार अपनी फसलों में सुधार करें और गेहूं की जगह गन्ना और गन्ने की जगह अंगूर बोयें।

ii) फिरोज़ तुगलक द्वारा दिल्ली के आस-पास सात प्रकार के अंगूरों की खेती के लिए 1200 बाग लगाना।

भारतीय किसान इस काल में रेशम उत्पादन (रेशम के कीड़े पालने का काम) नहीं करते थे और इसी काल में वास्तविक रेशम के विषय में कोई जानकारी नहीं मिलती। केवल टसर, एरी और मुका जैसे जंगली या

अर्द्धजंगली (कीड़ों से बनी) रेशम के विवरण मिलते हैं। पहली बार 1432 ई. में चीनी नाविक मा हुआन बंगाल में रेशम के कीड़े पालने का विवरण देता है।

20.2.2 नहर सिंचाई व्यवस्था और इसका प्रभाव

अधिकांशतः कृषि वर्षा अथवा नदियों द्वारा प्राकृतिक सिंचाई पर आधारित थी। चूंकि कृषि प्राकृतिक साधनों पर निर्भर थी अतः केवल वर्षा के पानी से उगाई जाने वाली **खरीफ** की फसल और मोटे अनाज उगाने की प्रवृत्ति अधिक थी।

समकालीन स्रोतों में हमें नहर द्वारा सिंचाई का विवरण भी मिलता है। नहरें बनवाने वाला पहला सुल्तान गियासुद्दीन तुगलक (1320-25) कहा जाता है। लेकिन बाद में फिरोज़ तुगलक (1351-88) द्वारा बड़े पैमाने पर नहरें बनवाने का काम किया गया। फिरोज तुगलक ने यमुना नदी से हिसार पानी ले जाने के लिए दो नहरें बनवाईं, दोआब में काली नदी से एक नहर खुदवाई जो दिल्ली के पास यमुना से मिलती थी, तथा एक-एक सतलज और घग्घर नदी से निकलवाई। निश्चय ही, उन्नीसवीं शताब्दी से पहले यह नहरों का सबसे बड़ा जाल था।

नहरों द्वारा सिंचाई के कारण पूर्वी पंजाब में कृषि का बहुत विस्तार हुआ। अब गन्ने जैसी नगदी फसलों के उत्पादन पर बहुत ध्यान दिया गया क्योंकि अन्य फसलों की तुलना में इसे सिंचाई की अधिक आवश्यकता होती थी। अफीफ के अनुसार भूमि का एक विशाल भाग जो लगभग 80 कोस (200 मील) में फैला था **रजबवाह** और **उलुगखानी** नामक दो नहरों से सींचा जाता था। अफीफ के अनुसार पूर्वी पंजाब में जहां पहले केवल एक फसल होती थी अब सिंचाई की सुविधाओं के कारण **खरीफ** और **रबी** की दो फसलें पैदा होने लगीं। इससे अब नहरों के किनारे कृषि बस्तियां बस गई। नहरों से सिंचाई वाले क्षेत्र में लगभग 52 ऐसी बस्तियां बस गई। अफीफ अत्यंत उत्साहपूर्वक कहता है "एक भी गांव उजाड़ नहीं रह गया और एक गज भमि भी ऐसी नहीं बची जहां खेती न होती हो"।

बोध प्रश्न 1

1) दिल्ली सल्तनत में भूमि और मनुष्य के अनुकूल अनुपात का क्या प्रभाव पड़ा?

....

....

....

....

....

2) नहरों द्वारा सिंचाई पर एक टिप्पणी लिखिए।

....

....

....

....

....

3) निम्नलिखित में से कौन से कथन सही (√) हैं और कौन से गलत (×):

   i) मौहम्मद तुगलक ने सिंचाई के लिए बहुत सी नहरें बनवाईं। ( )

   ii) सल्तनत काल में दोआब में दो फसलें उगाई जाती थीं। ( )

   iii) तेरहवीं-चौदहवीं शताब्दी में भारतीय किसानों द्वारा रेशम के कीड़ों का पालन किया जाता था। ( )

20.3 कृषि संबंध

कृषि अर्थव्यवस्था के विषय में चर्चा के लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक है कि दिल्ली सल्तनत की

स्थापना के बाद कृषि संबंधों की प्रकृति में क्या अंतर आया और यह अन्तर किस सीमा तक था। यह जानने के लिए 1200 ई. से पहले की कृषि व्यवस्था समझना जरूरी हो जाता है। हम यहां इस बहस में नहीं पड़ेंगे कि उस समय के सामाजिक और आर्थिक ढांचे को सामंती व्यवस्था कह सकते हैं या नहीं परन्तु हम काफी विश्वसनीय रूप से कह सकते हैं कि गौरी के आक्रमण के समय शासक वर्ग का आधार ग्राम था। लगभग कुछ उसी रूप में जैसा कि उस समय का पश्चिमी यूरोप का सामंत अभिजात्य वर्ग था।

इतिहासकार मिन्हाज गौरी और आरंभिक सुल्तानों का प्रतिरोध करने वाले भारतीय शासक वर्ग को **राय** और **राना** तथा उनके घुड़सवार सेनानायकों को **रावत** नाम से संबोधित करता है। उत्तर भारत के विभिन्न भागों से प्राप्त शिलालेखों के साक्ष्य के आधार पर **राजा (राय), रानका (राना)** तथा **राउत (रावत)** की सामंती पदानुक्रम व्यवस्था लगभग साबित हो चुकी है। तुर्की शासन के आरंभिक काल में सुल्तानों ने इस पराजित और पराधीन ग्रामीण कुलीन वर्ग के साथ एक प्रकार का समझौता किया। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि भेंट में वसूल की जाने वाली प्रमुख धनराशि **खराज** थी। ऐसा प्रतीत होता है कि अलाउद्दीन खलजी के काल में जब **खराज** का स्थान किसानों पर सख्ती से लागू और वसूल किए जाने वाले भूमि कर ने ले लिया फिर भी कर की वसूली में पहले के ग्रामीण कुलीन वर्ग की एक निश्चित भूमिका रहती थी। अलाउद्दीन खलजी के काल की एक घटना इस विषय को और स्पष्ट करती है, अफीफ के अनुसार जब दीपालपुर का **मुक्ती** (गवर्नर) गाज़ी मलिक वहां के एक **राय** (राजा) पर दबाव डालना चाहता था तो उसने **राय** से मांग की कि वह पूरे वर्ष का भूमि कर नकद धन के रूप में तुरंत दे। जब **राना** वह मांग पूरी न कर सका तो गाज़ी मलिक ने **मुकद्दमों** (ग्रामों के प्रधान) और **चौधरियों** को मारना पीटना शुरू किया। इस घटना से यह पता चलता है कि पहले का कुलीन तंत्र हालांकि अब सत्ता में नहीं था और पराधीन था, परन्तु कम से कम 14वीं शताबब्दी के प्रारंभ तक, अपने क्षेत्र के भूमि कर की वसूली करने का अधिकार रखता था। ग्राम प्रमुख और **चौधरी** की सहायता से सीधे कर वसूल करने का अधिकार प्रशासन के पास भी था।

20.3.1 कृषक

कृषि उत्पादन कृषकों द्वारा भूमि के पृथक्-पृथक् भागों पर किया जाता था। परन्तु यह कृषक अर्थव्यवस्था समतावादी नहीं थी। किसानों का स्वामित्व भूमि के भिन्न-भिन्न आकार के भागों पर था। बर्नी के विवरण के अनुसार एक ओर तो बड़े भू-भागों के मालिक **खोत** और **मुकद्दम** थे जबकि दूसरी ओर भूमि के छोटे-छोटे टुकड़ों का स्वामी **बलाहार** था जो गांव में निम्न कोटि का माना जाता था। विभिन्न प्रकार के किसानों के नीचे बड़ी संख्या में भूमिहीन मजदूर रहे होंगे परन्तु उनकी उपस्थिति के बारे में स्पष्ट जानकारी बाद के स्रोतों में मिलती है समकालीन ग्रंथों में नहीं।

कृषि योग्य भूमि की प्रचुरता होने के बावजूद भी कृषक जिस भूमि को जोतता था उस पर उसे स्वामित्व का अधिकार नहीं था। इसके विपरीत वह जो फसल उगाता था उस पर उच्च वर्गों के निश्चित अधिकार थे। हालांकि किसान को जन्म से स्वतंत्र स्वीकार किया जाता था परन्तु बहुधा उसे अपनी इच्छानुसार स्थान बदलने या भूमि छोड़कर जाने के अधिकार से वंचित रखा जाता था।

अफीफ के अनुसार एक गांव में लगभग 200 से 300 पुरुष होते थे। बर्नी के अनुसार प्रत्येक गांव में हिसाब-किताब रखने के लिए एक **पटवारी** होता था। उसके बही खाते से उस प्रत्येक वैध और अवैध भुगतान का पता चल सकता था जो किसान राजस्व अधिकारियों को देते थे। **पटवारी**, एक सरकारी कर्मचारी नहीं बल्कि ग्राम का अधिकारी होता था। निश्चय ही इस पद का प्रारंभ दिल्ली सल्तनत द्वारा नहीं किया गया था। इस प्रकार से एक ग्राम अधिकारी या लिपिक के होने से ऐसा प्रतीत होता है कि एक प्रशासनिक इकाई के रूप में गांव का अस्तित्व दिल्ली सल्तनत के प्रशासन से बाहर था।

ऐसा प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण गांव से भूमि कर का भुगतान एक संयुक्त इकाई के रूप में होता था अन्यथा सम्पूर्ण गांव का लेखा-जोखा रखने के लिए एक लिपिक की क्या आवश्यकता थी। इस प्रकार **पटवारी** का होना और उसके कार्यों की प्रकृति एक ग्रामीण समुदाय की उपस्थिति का भी आभास देता है। अलाउद्दीन खलजी द्वारा प्रत्येक किसान पर पृथक् भूमि कर निर्धारण के प्रयासों के बावजूद ऐसा प्रतीत होता है कि व्यवहारिक रूप से भूमि कर के भुगतान के लिए गांव एक इकाई के रूप में माना जाता था। बर्नी की यह शिकायत कि ''अमीर का भार गरीब पर पड़ता है'' भी यह दिखाती है कि ग्राम समुदाय एक आदर्श संस्था न होकर शोषण का एक यंत्र थी।

20.3.2 ग्रामीण मध्यस्थ वर्ग

आप खंड 5 में उस ग्रामीण कुलीन वर्ग के विषय में पढ़ चुके हैं जिसे **खोत,**

से जाना जाता था। यह वर्ग **किसानों के उच्च वर्ग से** संबंधित था। बर्नी के विवरण से ऐसा प्रतीत होता है कि अलाउद्दीन के कृषि संबंधी उपायों **से पहले इस वर्ग के** पास कर मुक्त भूमि होती थी। एक वर्ग के रूप में ग्राम प्रमुखों का वर्ग बहुत समृद्ध था। बर्नी विद्वेषपूर्ण प्रसन्नता से लिखता है कि अलाउद्दीन ने इस वर्ग (**खोत, मुकद्दम** और **चौधरी**) पर पूरी मात्रा में भूमि कर लागू किया और गृह कर और चराई कर से उन्हें जो छूट मिली थी वह भी समाप्त कर दी। उसने उन्हें **अपनी** ओर से कोई कर लगाने के लिए मना कर दिया और इस प्रकार इस (विशिष्ट) वर्ग को सामान्य किसानों के बराबर बना दिया।

यह ग्रामीण मध्यस्थ वर्ग भूमि कर की वसूली के लिए महत्वपूर्ण था इसलिए इनके विरुद्ध यह कठोर कदम अधिक समय तक नहीं चल सके और गियासुद्दीन तुगलक ने पुनः संतुलन स्थापित किया। सबसे पहले उन्हें चराई कर और स्वयं की भूमि पर कर देने से छूट मिल गई। परन्तु उन्हें किसानों पर अपनी ओर से उप कर लगाने का अधिकार नहीं मिला। फिरोज़ तुगलक के काल में उन्हें अन्य कई छूटें भी प्राप्त हो गईं। रोचक बात यह है कि बर्नी इन रियायतों और उससे इस वर्ग की बढ़ी हुई समृद्धि का वर्णन बड़े अनुमोदन के साथ करता है।

इस ग्रामीण मध्यस्थ वर्गों में **चौधरी** पद का उदय संभवतः चौदहवीं शताब्दी में हुआ। इसका उल्लेख मिन्हाज द्वारा या तेरहवीं शताब्दी के किसी भी अन्य स्रोत में नहीं हुआ है। इस शब्द का प्रयोग पहली बार चौदहवीं शताब्दी के मध्य में बर्नी द्वारा किया गया है। इब्न बतूता कहता है कि "**चौधरी** एक सौ गांवों का प्रमुख था" जिसे वह **सदी** कहता है। चौदहवीं शताब्दी के मध्य से गांवों के एक समूह के लिए प्रचलित शब्द **परगना** था। इतिहासकार इरफान हबीब के अनुसार संभवतः **चौधरी** गुर्जर प्रतिहार और चालुक्यों के समय के अधिकारी **चौरासी** का ही परिवर्तित नाम था हालांकि उसकी सत्ता और शक्ति काफी कम हो चुकी थी।

फिरोज़ तुगलक के समय से इन सभी मध्यस्थ वर्गों को एक सामान्य पदनाम **ज़मींदार** के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा जो मुगल काल में बहुत अधिक प्रचलित हो गया।

बोध प्रश्न 2

1) निम्नलिखित में से प्रत्येक पर लगभग 50 शब्दों में टिप्पणी लिखिए :

क) **ग्राम समुदाय**

....

....

....

....

....

ख) **चौधरी**

....

....

....

....

....

ग) **पटवारी**

....

....

....

....

....

2) निम्नलिखित वक्तव्यों पर सही (√) और गलत (×) के निशान लगाइये :
   i) दिल्ली सल्तनत के काल में भूमि पर किसानों का स्वामित्व था। ( )
   ii) **पटवारी** गांव का ऐसा कर्मचारी था जो बही खाते रखता था। ( )
   iii) सल्तनत काल में भूमि और व्यक्ति का अनुपात अनुकूल था। ( )

20.4 सारांश

इस इकाई में हमने दिल्ली सल्तनत के काल में कृषि व्यवस्था, कृषि उत्पादन, सिंचाई के साधन तथा किसान और भूमि से संबंधित मध्यस्थ वर्गों का अध्ययन किया। इस काल में बड़ी मात्रा में कृषि योग्य भूमि कृषि के उपयोग में नहीं थी। दोआब के क्षेत्र में दो फसल उगाने की प्रथा प्रचलित थी। नहरें कृत्रिम सिंचाई का प्रमुख साधन थीं। गांवों में उच्च भूमि अधिकारियों (**खोत, मुकद्दम** और **चौधरी**) तथा साधारण कृषक (**रैयुयत**) भिन्न स्तरों में बंटे थे।

20.5 शब्दावली

नकदी फसलें : ऐसी फसलें जो प्रमुखतया बाजार में बेचने के उद्देश्य से उगाई जाती थीं, जैसे—गन्ना, कपास, तथा नील आदि।

आसवन : वह प्रक्रिया जिसमें गर्म करके भाप बनाई जाती है और इस भाप को ठंडा करके तरल पदार्थ प्राप्त किया जाता है।

कोस : दूरी नापने का माप, 1 कोस = 2.5 मील

खरीफ : शरदकालीन फसल

रबी : जाड़े की फसल

रैयूयत : साधारण किसान

20.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 20.2
2) देखें उप-भाग 20.2.2
3) i) × ii) √ iii) ×

बोध प्रश्न 2

1) देखें उप-भाग 20.3.1 और 20.3.2
2) i) × ii) √ iii) √